छायावाद युग की प्रमुख विशेषताएँ

-जड़ा.उषा रानी
हिंदी प्राद्यापिका,
डी.एस शासकी महाविद्यालय,
ओंगोल, प्रकाशम् जिला|
आंध्रप्रदेश |

छायावाद युग :

द्विवेदी युग में हिंदी काव्य और भाषा में पर्याप्त परिष्कार हो चुका था, लेकिन द्विविदी युगीन काव्य में इतिवृत्तात्मकता का अधिक्य था| उसमे कल्पना का प्राचुर्य और अभिव्यंजना की गंभीरता का आभाव था |

छायावाद युग में काव्य को एक नया रूप मिला | खड़ी बोली में कोमलता और अभिव्यंजना शक्ति का विकास हुआ | कुछ लोग बीसवी शदी का आरम्भ मानता है कुछ लोग बीसवी शदी के दूसरे दशक और कोई दूसरे दशक के अंत से मानता है | सन् १९३५ में " कामायनी का प्रकाशन हुआ , बाद १९३६ में 'पंत' का युगान्त तथा सन् १९३७ में निराला की 'अनामिका' प्रकाशन हुआ | सन् १९३७ 'पंत' का 'रूपाभ' नवीन काव्य चेतना का पहला माध्यम बना इस धरा की जो कविताएँ लिखिगयी उनमे जीवनगत, वैयक्तिक और सामाजिक अनुभूतियों को वाणी मिली | इस पारिवार्थं के आधार पर हम छायावाद की सीमा रेखा १९१८-१९३६ ई. तक मानसकते है | यह एक प्रश्न है फिर भी विभिन्न कवितायओ पत्रिकाओ के आधार पर कहा जाता है कि छायावाद प्रवर्तक जय शंकर प्रसाद है |

छायावाद की मूल प्रवृत्ति रचनात्मक है, जो भारतीय संस्कृति की परंपरा, राष्ट्रीयता की आकांक्षा और नवीन मानवता वादी आदर्शों की प्रेरणा से अनुप्राणित है| छायावाद कवियों में क्रमशः प्रसाद निराला , पंत, महा देवी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है|

छायावाद युग की विशेषताए :

साहित्य की सभी विधावों की कुछ न कुछ विशेषताए होती है और उन्ही विशेषताओ के कारण विधा अपनी अलग पहचान बनाती है | छायावादी काव्य की पहचान निम्न लिखित विशेषताओ के आधार पर की जाती है :

१.स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह :

इस काल के काव्य में कथा-कथन, इतिवृत्तात्मकता वर्णन,आदर्शवाद, रूढिबद्धता आदि की प्रमुखता है | इन सभी को स्थूलकी संज्ञा दी गयी है| छायावाद कवियो ने अपने काव्य में छोड़ दिया है| छायावाद कवियो की दृष्टी प्रकृति के प्रति एवं रहस्यात्मक दृष्टी से अलंकृत है-

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदल अधखुले अंग,

खिल हो ज्यों बीजली का फूल,
मेघ-बन बीच गुलबी रंग ||

२.सौंदर्य और प्रेम :

छायावाद सौंदर्य और प्रेम का काव्य है| छायावाद कवियो में प्रणय निवदन का रूप भरा है| प्रसाद, निराला पंत,महादेवी वर्मा के काव्य इसके वुधाहरण है-

वह अनंग पीड़ा अनुभव सा ,अंग भंगिमो का नर्तन,
मधुकर के मरंद उत्शाव सा,मदिर भाव से आवर्तन |

३.प्रकृति- सौन्दर्य :

प्रकृति- सौन्दर्य में निहित सकती को उन्हों ने विभिन विधाओ से देख्कर काव्य का विषय बना है|

बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही,

४. मानवतावादी विचारधारा:

जिस समय छायावादा का अभ्युदय हुआ उस समय पूरा विस्वा में मानव क वंदना का स्वर मुखरित को रहा है | यह प्रवृत्ति निराला के काव्य में अधिक दिखाई पड़ती है-

वह तोडती पत्थर

देखा उसे मैंने इलाहबाद के पट पर
वह तोडती पत्थर
नहीं छायादार
पेड़ वह जिसके तले बौटी हुए स्वीकार
- तोडती पत्थर|

५. नारी की महता :

युगान से त्रिअस्कृत नारी को छायावाद काव्यों में महत्वपूर्ण स्थान मिला है मिथिली का –

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी |
आन्चाद में है धुत और आँखों में पानी ||

६.सौंदर्य के भिन्न रूपों का वर्ण :

मानव स्वभाव से नी सौन्दर्य प्रेमी है : छायावादी कवियों को मानवीय सौन्दर्य का चित्रण करने में अभूत पूर्ण सफलता मिली है-

तू खिली एक उच्छावास संग

विसवास-स्तब्ध बंध-अंग अंग

कंपा अधरों पर थर -पर थर

-सरोज स्मृति

७.रहस्यवादी प्रवृत्ति :

छायावादी कवियों ने प्रकृति के माध्यम से रहस्यात्मक भावों की अभिव्यक्थी है |

महादेवी वर्मा छायावादी काव्य धरा की विशुद रूप से रह्स्यस्वद्दी काय्यित्री साबित करती है –

पंथ रहने दो अपरिचित रहने दो अकेला !

घेर ले छाया अमा बन

-महादेवी वर्मा

इसके अलावा प्रतीकात्मकता चित्रात्मकता भाषा, कल्पना की प्रधानता , गीत प्रधानता आदि छायावादी काव्य के विशेषता है |